Daily Gospel Reflections in Hindi

14 October 2019

मत्ति 18 : 10 - 14

No one shall be lost

संत मत्ति का सुसमाचार अध्याय 18वॉ की शुरुआत इस प्रकार हुई, प्रभु कें चेलों के बीच एक वाद विवाद चल रहा था कि स्वर्ग राज्य में सबसे बड़ा कौन हैं ? इस जवाब के रुप में प्रभु एक छोटा बालक को उनके सामने प्रस्तुत करते हुए कहता है, कि यदि तुम फिर छोटे बालको जैसें नही बन जाओगे तो, स्वर्ग के राज्य में प्रवेश नही करोगें । मत्ति 18,3

प्रभु के राज्य का वारिस बनने के लिए, सबसे पहले हमें छोटा बालक जैसें बनना है। मतलब निर्मलता एवं विनम्रता का हदय अपनाना हैं। प्रभु येसु मसीह ने भी अपने जीवनकाल में इन गुणों को अपने कर्मों के जरिए ,दूसरों को सिखाया था।

ईसा का जीवन निर्मलता से भरा हुआ था। निर्मलता भरें हदय से उन्होने दूसरो को दया, करुणा एवं क्षमा दिखाया। समूह में तिरस्कृत लोगो कें परिवार में जाकर उनको नई जिंदगी दिया। विनम्रता से उन्होने, पापियों के साथ घूमा फिरा, उनके पापो को क्षमा करते हुए, नव जीवन प्रदान किया। विनम्रता से उन्होने, अपने शिष्यो के पॉव धोंकर उन्हें प्रेम की नई शिक्षा प्रदान किया।

प्रभु हम में से किसी को भी स्वर्ग राज्य से दूर रखना, और दूर जाना नही चाहता हैं। इसलिये भटकी हुई भेड़ को भी प्रभु ढूँढकर निकालते हैं। उसी तरह अगर हम लोंग ईश्वर से दूर चले जाते हैं, तो हमे–भी प्रभु उनकी ओर वापस ले आते है। साथ ही साथ हमें नया व्यक्ति बना देता है।

हम जीवन मे जाने या अंजाने में ईश्वर के विरूद्ध चले गये है, लेकिन फिर भी ईश्वर उनकी ओर हमें बुलाते है। हम प्रभु के निर्मलता एवं विनम्रता रूपी स्वभावों को अपनातें हुए, नया व्यक्ति बनकर, स्वर्गराज्य के वारिस बननें कें लिये, अपनें आप कों तैंयार करें।

Rev. Fr. Alex Pulickaparambil

©Rights Reserved. Commission for Social Communications, Diocese of Sagar 2019